एस.एस. कॉलेज जहानाबाद।

विभाग - हिन्दी

विषय - 'चन्द्रगुप्त' नाटक

वर्ग - स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, भाग-1.

शिक्षण-माध्यम - व्हाट्स-एप

समय - 11 बजे से 12 बजे तक - 15.10.2020

शिक्षक - डॉ. रमेश शर्मा

पाठ - नाटक की व्याख्येय पंक्तियाँ।

प्रिय छात्र-छात्राएँ।

आज की व्याख्येय पंक्तियाँ निम्न हैं ——

"पौरव! ब्राह्मण राज्य करना नहीं जानता, करना भी नहीं चाहता, हाँ वह राजाओं का नियमन करना जानता है, राजा बनाना जानता है। इसलिए तुम्हें अभी राज्य करना होगा, और करना होगा वह कार्य जिसमें भारतीयों का गौरव हो और तुम्हारे क्षात्र धर्म का पालन हो।"

प्रस्तुत पंक्तियाँ नाटककार जयशंकर प्रसाद रचित 'चन्द्रगुप्त' नाटक के तृतीय अंक के दूसरे दृश्य से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ चाणक्य द्वारा कही गई हैं। इन पंक्तियों में वस्तुतः चाणक्य ने पर्वतेश्वर को राजधर्म और क्षात्रधर्म क्या है इसकी शिक्षा दी है।

ज्ञातव्य कि पर्वतेश्वर ने जब सिकन्दर से परास्त होकर उससे संधि स्वीकार कर ली थी तभी से उसके भीतर द्वन्द्व चल रहा था। भारतीय और क्षात्र धर्म के विरुद्ध उसका सिकन्दर से संधि ~~प्रस्ताव~~ उसे व्यथित कर रही है। चाणक्य से संवाद में पर्वतेश्वर स्पष्ट स्वीकार करता है कि — आर्य चाणक्य! मैं क्षमता रखते हुए जिस काम को

न कर सका, यह कार्य निस्सहाय चन्द्रगुप्त ने किया। आर्यावर्त से यवनों को निकल जाने का संकेत उसके प्रचुर बल का द्योतक है। मैं विश्वस्त हृदय से कहता हूँ कि चन्द्रगुप्त आर्यावर्त का ~~एकमात्र~~ एकछत्र सम्राट होने के उपयुक्त है। मुझे छोड़ दें। इस प्रकार पर्वतेश्वर जो हमेशा क्षात्र धर्म की दुहाई देकर अपनी वीरता के गीत गाता था, आज असहाय दीखता है। इसी संदर्भ में चाणक्य पर्वतेश्वर से कहता है आपको वह कार्य करना होगा जो भारतीयों का गौरव है और तुम्हारे क्षात्र धर्म का पालन हो। वास्तव में चाणक्य चाहता है कि सिकन्दर ने यदि तुम्हें अपमानित किया है तो तुम भी अब सिकन्दर के विरुद्ध खड़ा होकर अपने अपमान का बदला लो। मगध की सेना भी आ रही है चन्द्रगुप्त सिंहरण सभी तैयार हैं। यह अलग बात है कि ~~सिकन्~~ पर्वतेश्वर चाणक्य के इस प्रस्ताव का समर्थन करने की हिम्मत नहीं जुटाता है।

इस प्रकार पर्वतेश्वर को राजधर्म और क्षात्र धर्म का पाठ पढ़ाकर वास्तव में आर्यावर्त की विजय गाथा का शंखनाद चाणक्य कर रहे हैं।

[signature]
15.10.20